होइहि सोई जो राम रूचि राखा।
को करि तर्क बढावै साखा।।

अर्थ.....

जो कुछ राम ने रच रखा है, वही होगा। तर्क करके कोई फायदा नही होता।

आज के समय में हर आदमी इस बात को एक दिन में अनेकों बार दोहराता है। जब उसे उसके द्वारा किये गए किसी भी कर्म में वांछित सफलता नही मिलती है तो अपने आप को संतुष्ट करने के लिए भगवान की इच्छा होने का श्रेय देता है। जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए , मनुष्य को अपनी तरफ से हर यथासंभव कर्म करना चाहिए । पुरुषार्थ हेतु तत्पर रहें, सात्विक बुद्धि रखें और प्रमाणिकता के साथ प्रयास करे , फिर जो कुछ भी प्राप्त हो , उसे प्रभु की कृपा समझ कर स्वीकार करें, और सब प्रयास करने पर भी अगर सफलता न मिले तो भी हरि इच्छा समझकर अपनी कमियों को जानने का प्रयास करना चाहिए। इसलिए जब हमारे जीवन में कुछ अच्छा घटित हो तो उसका श्रेय खुद को नही लेना चाहिए, और कुछ बुरा हो तो ईश्वर को दोष नही देना चाहिए।

जीवन में कोई भी समस्या आए तो ईश्वर पर पूर्ण विश्वास के साथ अपनी तरफ से हर संभव कोशिश करनी चाहिए और अपनी इच्छा पूरी न हो तो समझ लो उसकी इच्छा कुछ और है।

सोचा हुआ न हो तो हरि इच्छा ।
सोचा हुआ हो जाए तो हरि कृपा ।।

CS Praveen Soni
Central Council Member &
Chairman, ICSI-CCGRT